ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 190-193**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

स्त्री का आत्मसंघर्ष और 'सेवासदन'

डॉ0 निमिषा सिंह

एसो0 प्रो0– हिन्दी विभाग, जे0बी0 महाजन डिग्री कॉलेज, चौरी–चौरा, गोरखपुर, (उ0प्र0) भारत

Received-06.08.2022, Revised-11.08.2022, Accepted-14.08.2022 E-mail: rahulrai28384@gmail.com

सारांशः– ***'नारी–जाति की विवशता, परवशता, निस्सहायता, आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक परतन्त्रता अर्थात् नारी–दुर्दशा पर आज हिन्दी–साहित्य में जितनी चर्चा हो रही है, बीसवीं सदी के प्रारम्भ में ही प्रेमचंद के यहाँ कहीं इससे ज्यादा मुखर थी। मुंशी प्रेमचन्द ने बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध की उन्हीं नारियों के चरित्र को बखूबी उतारा है, जो आर्थिक असमानता और शोषण का शिकार हो रही थी। ऐसी स्त्रियों के साथ खड़े होकर प्रेमचन्द ने उनके उद्धार का प्रयास किया। 'सेवासदन' प्रेमचंद द्वारा रचित पहला सामाजिक उपन्यास है, जो सन् 1916 में उर्दू भाषा में 'बाजारे हुस्न' नाम से लिखा गया। बाद में सन् 1919 में प्रेमचंद जी ने स्वयं इसका हिन्दी अनुवाद भी किया। प्रेमचंद की अनेक रचनाओं में 'सेवासदन' ऐसा उपन्यास है, जिसमें समाज की अनेक समस्याओं को एक साथ उभारा गया है और उसका उचित समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। यह एक ऐसा उपन्यास है, जिसने उन्हें हिन्दी के एक लोकप्रिय उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित किया और समूचे हिन्दी उपन्यास को एक नयी दिशा प्रदान की। वास्तव में कहना चाहिए कि उपन्यास की सामाजिक शक्ति और स्वरूप की सही पहचान सर्वप्रथम प्रेमचंद द्वारा हुई। 'सेवासदन' उपन्यास द्वारा लेखक ने स्त्री के अस्तित्व जैसे गम्भीर विषय को एक निर्णायक मोड़ देने का कार्य किया है। 'सेवासदन' की नायिका सुमन के रूप में लेखक ने पहली ऐसी स्त्री–पात्र का चरित्र उपस्थित किया है, जो समाज में अपने अस्तित्व और आत्म–सम्मान के लिए संघर्ष करती है।'***

कुंजीभूत शब्द– विवशता, परवशता, निस्सहायता, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक परतन्त्रता, हिन्दी–साहित्य, अस्तित्व।

'सेवासदन' वर्तमान समय में भी समकालीन और प्रासंगिक बना हुआ है, क्योंकि स्त्री की विवशता, परवशता, असहाय स्थिति और शैक्षिक परतंत्रता पर जितनी चर्चा आज हो रही है, जितने विमर्श हो रहे हैं, सभी की चर्चा प्रेमचंद ने 'सेवासदन' में कर दी थी। 'सेवासदन' उपन्यास में प्रेमचंद ने पति की उपेक्षा और अपमान का विद्रोह कर वेश्यावृत्ति अपनाने वाली स्त्री के प्रति सहानुभूति दिखाई है। अपने पहले उपन्यास में ही लेखक ने युगीन यथार्थ की कठिनाइयों को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रित करने का सार्थक प्रयास किया है। 'सेवासदन' में प्रस्तुत समस्याएँ मध्यवर्ग की हैं। इन सभी समस्याओं की जड़ में स्त्री की आर्थिक–निर्भरता ही है। 'सेवासदन' में अनमेल विवाह तथा वेश्या–समस्या की जिम्मेदारी के लिए पूर्णतः दहेज–प्रथा उत्तरदायी है।

अतिरिक्त सुख–भोग की चाहत में अपना सर्वस्व गवां लेने के बाद कथानायिका सुमन को सामाजिक दुनियादारी की समझ हो जाती है। तब उसका दृष्टिकोण समाज के प्रति उदार हो जाता है और उसका पति साधू बनकर अपने कर्मों का पश्चाताप करता है। युगीन वैश्याओं के दबाव का परिणाम है–सुमन का चरित्र। उस समय भी स्त्री को आगे बढ़ाने के लिए अनेक कार्यक्रम चलाये जाते थे। नारी–शिक्षा, विधवा–समस्या, नारी–स्वाभिमान जैसे आंदोलन चला करते थे। प्रेमचंद जी बताना चाहते थे कि स्त्री–समस्या का समाधान स्त्रियों द्वारा ही किया जा सकता है। ''विवशता, पीड़ा, मानसिक दुःख और असुरक्षित जीवन जीते हुए उनकी सभी स्त्रियाँ व्यवस्था की मोहरा बनकर कभी समझौता करती हैं तो कभी विद्रोह''(1)
वास्तव में 'सेवासदन' की रचना वैश्याओं को प्रदूषित माहौल से निकालकर एक स्वस्थ, शिक्षित और सुसंस्कृत वातावरण में रहकर आत्मनिर्भर और आर्थिक–निर्भर बनाने के लिए की गई है। प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री जीवन की प्रत्येक स्थिति का बेबाक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। सालों पहले कथाकार ने जिन सामाजिक समस्याओं की तरफ संकेत किया, वह आज भी उसी रूप में हमारे सामने खड़ी है। ''नारी का मुक्ति–संघर्ष इतिहास की एक लम्बी कथायात्रा है। इसका यह संघर्ष कभी आत्मसंघर्ष के रूप में आया तो कभी पुरूष–संघर्ष के रूप में प्रकटित हुआ है। तमाम सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष भी उसके मुक्ति संघर्ष में पड़ाव बने हैं। इस लंबे संघर्ष में वह कभी–कभी विजयिनी बनी है, प्रायः पराजित ही हुई है। परन्तु वही स्त्री, जब आज आत्म–परीक्षा के लिए तैयार है, पुरूष के प्रश्नों का जवाब देने के लिए व्याकुल है, पुरूष के वर्चस्व से मुक्ति पाने के लिए छटपटा रही है, स्त्री जीवन का हक–हिसाब करना जान गई है, सब समझने लगी है, सब कहने लगी है और सब लिखने भी लगी है, तब आज उसके अस्तित्व को स्वीकारा भी जा रहा है।''[2]

'सेवासदन' की कथानायिका सुमन द्वारा जीवन पर्यन्त अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए 'सेवासदन' का संचालन करना और नारी–मुक्ति आन्दोलन में सक्रिय प्रयास करना है। सुमन अपनी इच्छा से नहीं बल्कि हालात से मजबूर होकर वैश्या बनती है। सुमन अपने अर्न्तमन से वेश्या होकर भी पवित्र थी, परन्तु दहेज की पाशविकवृत्ति ने उसे दोराहे पर लाकर

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

खड़ा कर दिया–''सेवासदन उपन्यास में सुमन के पराभव का कारण दहेज की राक्षसी प्रथा है, जिससे उसका विवाह अच्छे घर में नहीं हो पाता तथा पति–पत्नी के अनमेल स्वभाव और वाह्य परिस्थितियाँ सुमन को वेश्या बनने के लिए मजबूर कर देती है, उसके मस्तिष्क पर अनेक आघात से उसका हृदय विदीर्ण हो गया है, जिसके कारण वह डूबती चली जाती है।''[3] यह स्थिति भारतीय स्त्री की विवशता और उसकी गुलामी को बड़ी ही सजीवता से दर्शाती है। स्त्री–जीवन की तमाम समस्याओं के साथ–साथ दहेज–प्रथा, घूसखोरी, चरित्रहीनता, धर्माडम्बर, बेमेल विवाह, वैश्यावृत्ति जैसी अनेक सामाजिक बुराईयों के कारण यह उपन्यास वर्तमान में भी समकालीन और प्रासंगिक बना हुआ है। तमाम विकृतियों के बाद भी यह उपन्यास मनुष्य के हृदय की गहराइयों तक पहुँचकर उसे संवेदनशील बनाने के लिए विवश करता है।

नारी की स्थिति जो बींसवी सदी में थी, परिवर्तित होकर वही आज भी है। सच ये है कि आधुनिक कहलाने वाली शिक्षित और संस्कारी नारी पहले से कहीं ज्यादा विवश, लाचार और कुंठित है। वह दोहरा जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। समकालीन महिला उपन्यासकार कृष्णा सोबती भी इस सत्य से रूबरू होती दिखाई देती हैं। 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में स्त्रियों के बारे में वह लिखती हैं–'स्त्री' चाहे घर की मालकिन हो या दिल की मलिका–वह जीवन के प्रत्येक मोड़ पर छली और ठगी गई है।[4] दहेज सामाजिक दंश पहले भी था और आज भी है। ''सेवासदन'' में दिखाया गया है कि दहेज चुकाने के लिए किस तरह एक ईमानदार पिता अपनी ईमानदारी को दाँव पर लगा देता है। इसी प्रकार ढोंगी बाबा के रूप में महन्त रामदास का चरित्र है। जिस पर पहले भी और आज भी लोग आँख बन्द करके विश्वास कर लेते हैं और ठगे जाते हैं। यह उपन्यास अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित है। इन समस्याओं के माध्यम से प्रेमचंद ने भारतीय जनमानस को गहराई तक झकझोरा है। ''इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने विवाह से जुड़ी कई समस्याओं–तिलक, दहेज की कुप्रथा, कुलीनता का प्रश्न, अनमेल विवाह, विवाह के बाद पत्नी का घर में स्थान के साथ स्त्री–शिक्षा का अभाव, नारी की पराधीनता, नारी की सामाजिक उपेक्षा, नारी के प्रति–असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार तथा वेश्यावृत्ति और वेश्याओं की सामाजिक स्थिति आदि पर प्रकाश डाला है। 'सेवासदन' में वर्णित समस्याएँ, मध्यवर्ग की समस्याएँ है। सभी समस्याओं की जड़ में अर्थजनित समस्या ही कार्य करती है–प्रेमचंद इसको बखूबी दिखा पाए हैं।[5]

देखा जाए तो वह प्रेमचंद की नायिका सुमन हो या आज के दौर की आधुनिक कहलाने वाली स्त्री, दोनों ही घर और बाहर की जिम्मेदारियों को बखूबी सम्हालने के बाद भी मानसिक, आर्थिक और सामाजिक यातना से गुजर रही हैं। आज की स्त्री सामाजिक विरोधों के बीच अपनी पहचान, अपना वजूद तलाशने का सार्थक प्रयास कर रही है। प्रेमचंद की तरह की समकालीन महिला–उपन्यासकार प्रभा खेतान भी पुरूष से परे हटकर स्त्री के वजूद को स्वीकारती है। उनके उपन्यास 'अपने–अपने चेहरे' की नायिका रमा कहती है–''ओफ! पुरूष खोज ले, पुरूष से शादी कर ले, पुरूष को बाँधकर रखने का गुटका क्यों नहीं ईजाद कर पाई। पुरूष बेटे को क्यों नहीं वश में रखा? क्या बिना पुरूष के औरत इतनी अधूरी है? क्या सारे अस्तित्व का सन्दर्भ केवल पुरूष है? अपने आप में वह कुछ भी नहीं। यानी उसकी अपनी कोई भूमिका नहीं।''[6]

इसी प्रकार प्रेमचंद ने 'सेवासदन' में वेश्या जीवन को एक सामाजिक संदर्भ के रूप में देखा है। वास्तव में वेश्या का जीवन पुरूष को अपनी ओर आकर्षित करता है, परन्तु इस आकर्षण के पीछे नारी–जीवन की गहन प्रतारणा, आर्थिक विपन्नता, लाचारी और मजबूरी होती है, तो मध्यवर्गीय स्त्री को वेश्या बनाने के लिए मजबूर करती है। ''सेवासदन'' में प्रेमचंद ने पहली बार पति का विद्रोह करने वाली और प्रतिक्रिया में वेश्यावृत्ति अपना लेने वाली स्त्री के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है।.....वह स्वयं वेश्यावृत्ति नहीं अपनाती है। सामाजिक मजबूरियाँ उसे वेश्या बनाती हैं.....प्रेमचंद ने पतिव्रता को नारी–चरित्र का एकमात्र मूल्य स्वीकार नहीं कि है। पति घर और समाज से सुमन का विद्रोह शोषित और दलित नारी का पुरूष समाज से विद्रोह का प्रतीक है।''[7]

'सेवासदन' में सुमन का चरित्र लम्बा होने के कारण वह कथा–नायिका के रूप में नहीं उभर पाता, बल्कि मार्ग भटक जाने के कारण वह पश्चाताप का जीवन व्यतीत करती है और सभी स्त्रियों के लिए प्रेरणा बनती है। सुमन के चरित्र के बहाने कथाकार ने स्पष्ट किया है कि जीवन में अनेक संघर्षों के बावजूद नयी शुरूआत की जा सकती है, सफलता के नए विकल्प तलाशे जा सकते हैं। अपने चरित्र को दृढ़ करती हुई, संघर्षों से टकराकर नित आगे बढ़ती हुई, सुमन अपना सम्पूर्ण जीवन 'सेवासदन' के लिए समर्पित कर देती है।

कथाकार प्रेमचंद ने सुमन के माध्यम से नारी के प्रति अपने स्वतन्त्र और गम्भीर चिन्तन का परिचय दिया है। गद्य–साहित्य के साथ–साथ यदि हम काव्य–साहित्य का भी अवलोकन करें तो स्त्रियों के प्रति कवियों के हृदय में व्यापक सहानुभूति दिखाई पड़ती है। आदिकाल से लेकर आधुनिक–काल तक का हिन्दी–काव्य नारी की विभिन्न मार्मिक संवेदनाओं से भरा पड़ा है। हिन्दी–साहित्य की विभिन्न काव्यधाराएँ, कव्यात्मक–आन्दोलन, नारी–जीवन के संघर्षों को गहरी रेखाओं में

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

उभारने का सार्थक प्रयत्न करते हैं और अपने प्रति होने वाले अन्याय, शोषण और उपेक्षा के प्रति सर्तक रहने के लिए सचेत भी करते हैं। छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने नारी को सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संकीर्णताओं से मुक्ति का संदेश दिया है और साथ ही पुरूष की समगामिनी बनने में उसकी द्वन्द्वमयी मनोभूमि को सबल बनाया है। उनका दृष्टिकोण है–

मुक्त करो नारी को
चिरवंदिनि नारी को
युग–युग की बर्बर कारा से
जननी सखि प्यारी को।" –सुमित्रा नन्दन पन्त

"सेवासदन' में लेखक ने समाज के कुछ प्रबुद्ध वर्ग के लोगों को सक्रिय कर आगे बढ़ाकर सुमन के द्वारा वेश्याओं के उद्धार हेतु 'सेवासदन' की स्थापना का जो समाधान, सुझाव या विकल्प दिया है, वह कहीं से तर्क संगत प्रतीत नहीं होता है, किन्तु इसके पीछे कथाकार की व्यापक संवेदना और सहानुभूति को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। स्त्री की विवशता, पराधीनता के प्रति उनकी सहानुभूति स्त्री के प्रति पाठकों को नए ढंग से सोचने को मजबूर करती है।"[8]

"सेवासदन' में सुमन का चरित्र बेजोड़ और दमदार है। कथा में लेखक ने लगभग उन सभी सामाजिक विकृतियों पर प्रकाश डाला है जो हमारे समाज में उपस्थित हैं। आज भी नारी–विषयक विभिन्न कानून बनाकर स्त्री के व्यतिव को संरक्षरण दिया जा रहा है और साथ ही साथ महिला विकास के लिए विभिन्न प्रकार के मार्ग प्रशस्त हुए हैं। सरकारी प्रयत्नों के परिघाम स्वरूप बाल–विवाह और दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों पर काबू पाया गया है। इधर सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा नारी–विकास को एक आंदोलन का स्वरूप प्रदान कर भारत वर्ष में विभिन्न प्रकार के प्रगतिशील कदम उठाये गये हैं।"[9]

"नारी–जीवन की संघर्ष–गाथा होने के कारण सेवासदन महाउपन्यास की श्रेघी में आता है। स्त्री को सामाजिक स्वीकृति दिलाने की लेखकीय मंशा इस कृति को महत्वपूर्ण बनाती है।"[10]

वस्तुतः 'सेवासदन' की रचना का एक विशेष युगीन सन्दर्भ रहा है, जिसमें पुरुषों के साथ–साथ स्त्रियों की भी पूरी सक्रियता दिखाई देती है। उनकी संवेदना का विस्तृत दायरा यह बताता है कि उनके लिए अस्मिता का अर्थ सिर्फ पितृसत्ता से मुक्ति ही नहीं है, बल्कि पूरी समग्रता के साथ अपने को जोड़ पाना है। "दार्शनिकों, बौद्धिकों ने स्त्री के अन्तर्मन को एक अबूझ पहेली की तरह बनाकर प्रस्तुत किया है। उनकी माने तो स्त्री का अन्तर्जगत् इतना उलझा हुआ है कि कोई वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकता। बस यही मानसिकता स्त्री की छवि को तमाम पूर्वाग्रहों से आच्छादित कर देती है जबकि उसका मन इतना निर्मल और पारदर्शी है कि कोई भी उससे अपनापन जोड़ सकता है। बस एक बार आप थोड़ा–सा अपने मन की गाठें तो खोलें। अपने दंभ को तो छोड़े।"[11]

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि सेवासदन का प्रकाशन हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में स्त्री के अस्तित्व को लेकर एक क्रान्तिकारी कदम है। सामाजिक सरोकारों से जुड़े हुए उपन्यास 'सेवासदन' की रचना आज से सौ साल पहले 1918 में प्रेमचंद ने की थी। 101 वर्ष के इस अन्तराल में भी यह उपन्यास प्रासंगिक बना हुआ है वास्तविकता यह है कि स्त्री की चेतना का निर्माण जैविकता, दैनिक जीवन की परिस्थितयों के साथ–साथ वहाँ की 'सामुदायिकता' भी करती है। अपने समुदाय के कुछ आदर्श और दायरे होते हैं, जो उसके स्त्रीत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 'सेवासदन' का मुख्य कथानक स्त्रीत्व के आदर्श से सुमन का पतन और उसके पुनः उत्थान का प्रयास है। इसमें लेखक ने सुमन के सुमनबाई बन जाने तक की कथा सुनायी है। सुमन सामाजिक द्वेष का शिकार होती है। फिर भी उसका किरदार उपन्यास में सबसे अधिक सशक्त है। वेश्या–जीवन से जुड़े होने के बाद भी इस उपन्यास के भीतर समाज–सुधार की समस्या को व्यक्तिगत बनाकर सामाजिक विषय के रूप में परिवर्तित कर दिया है। वे स्पष्ट करना चाहते हैं कि स्त्री स्वयं इस दलदल में नहीं जाना चाहती बल्कि सामाजिक परिस्थितियाँ उसे वहाँ तक पहुँचाती हैं। नारी–जीवन की समस्याओं और अन्य सामाजिक विकृतियों से भरा यह उपन्यास आज भी समकालीन और प्रासंगिक बना हुआ है। नारी के संघर्ष की गाथा इसे महत्वपूर्ण बनाती है। प्रेमचंद की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए आज की लेखिकाएँ भी स्त्री अस्तित्व की लड़ाई पूरे साहस के साथ लड़ना चाहती है। उनका मानना है कि अबरोना–धोना छोड़कर अब स्त्रियों को चुनौतियों से जूझना है। अपना हक हासिल करना है, जो इंसान होने के नाते उन्हें बहुत पहले मिल जाना चाहिए था। लेकिन निरन्तर संघर्ष के बावजूद भी स्त्री के अस्तित्व को एक सही दिशा नहीं मिल पा रही है। स्त्री का स्वतन्त्र विकास होना बहुत ही जरूरी है, 'स्त्री की सार्थकता सुख खोजने में नहीं, त्याग में है', इस परम्परा और मूल्यबोध के साथ–साथ आधुनिक होना होगा। अपनी सीमा–रेखा का विस्तार करना होगा, और अन्ततः मैं प्रभा खेतान के विचार से सहमत होते हुए अपनी लेखनी को विराम देती हूँ–"वास्तव में 'सेवासदन' की स्थापना करके प्रेमचन्द

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

ने वैश्या समस्या का उपयुक्त समाधान प्रस्तुत किया है। ''जरूरत है कि स्त्री अपनी मानवीय गरिमा और अधिकार को समझकर संरचनात्मक, सांस्कृतिक तथा मानवीय दृष्टिकोण के मूल तत्त्वों का विश्लेषण कर।''[12]

अन्ततः कह सकते हैं कि प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में पराधीन नारी की विवशता को बखूबी उकेरा है। सदियों से चली आ रही पराधीन स्त्री को मुक्त करने का संकल्प लिया है। शताब्दियों से चली आ रही दासता के कारण स्त्रियों के भीतर का जो स्वाभिमान कमजोर हो चुका था ने उसे जागृत करने का अथक प्रयास किया। प्रेमचन्द स्त्री को बन्द दरवाजे के पीछे से निकालकर खुला आकाश देना चाहते थे। वे स्त्री को स्वाभिमान से पूर्ण, आदर्श तथा राष्ट्र प्रेम की भावना से युक्त देखना चाहते थे। ''प्रेमचन्द की नारी का जीवन धार प्रेम है और वह प्रेम के उच्चतम आदर्श–आत्मसमर्पण, पवित्रता, स्नेह, वात्सल्य, संयम, विनय, क्षमा, धैर्य, सहिष्णुता, लज्जा, आत्माभिमान आदि सुन्दर और उदात्तभावों की साक्षात् मूर्ति है।''[13]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 उषा कीर्तिराणावतः प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, पृ०–112, नई दिल्ली वर्ष–2005.
2. डॉ0 निमिषा सिंह, प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, पृ0–1, अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, बिहार, ISBN-978-93-80859-97-2, वर्ष–2013.
3. डॉ0 गीतालाल, प्रेमचन्द्र का नारी–चित्रण, प्रेमचन्द, सेवासदन, पृ0–310
4. घृणा सोबती, 'जिन्दगीनामा'।
5. डॉ0 कुसुम राय, हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, पृ0–323, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, ISBN-978–93–5146–0909, वर्ष 2015.
6. प्रभा खेतान, अपने अपने चेहरे, पृ0–81 किताबघर अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, वर्ष–1994.
7. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, पृ0–128–229, वर्ष–1994.
8. डॉ कुसुमराय, हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, पृ०–323, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, ISBN–978–93–5146–090, वर्ष–2015.
9. डॉ0 रामदरश राय, मानक हिन्दी निबंध, पृ०–182, चतुर्व्यूह प्रकाशन, गोरखपुर, वर्ष–2000.
10. डॉ0 कुसुम राय, हिन्दी–साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, पृ०–323, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, ISBN–978–93–5146–090, वर्ष–2015.
11. गणेश पाण्डेय, यात्रा नयी सदी की कविताएँ, पृ०–135, ISSN–2321–9963, अंक और वर्ष Jan-June 2003.
12. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, पृ०–14 वर्ष 2003.
13. प्रेमचन्द, सेवासदन, पृ0–310.

*****